रुचिरा

तृतीयो भागः

अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

प्रथम संस्करण
जनवरी 2008 माघ 1929

PD 735T ML

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

रु 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा इंडिया ऑफसेट प्रिंटर्स, एक्स-36, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नयी दिल्ली-110020 से मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-810-2

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 — फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 — फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 — फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 — फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगांव
गुवाहाटी 781021 — फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पेय्येटि राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली
सहा. उत्पादन अधिकारी : वी.आर. देविकर
सहायक संपादक : एम. लाल

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
दुर्गा बाई व्याम

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीयज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां

प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठि-महाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

निदेशकः

राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

नयी दिल्ली

30 नवम्बर 2007

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली।

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

सदस्य

ज्ञानदेवमणि त्रिपाठी, *सहायक निदेशक*, सीमैट, एस.सी.ई.आर.टी, पटना, बिहार।

पंकज कुमार मिश्र, *प्रवक्ता संस्कृत*, सेन्ट स्टीफेन्स कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–7

राघवेन्द्र प्रपन्न, *प्रवक्ता*, एम.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली–31

नारायण दाश, *प्रवक्ता संस्कृत*, रामकृष्ण मिशन आवासीय महाविद्यालय, नरेन्द्रपुर, कोलकाता।

संगीता गुंदेचा, *प्रवक्ता संस्कृत*, तुलनात्मक भाषा तथा संस्कृति विभाग, बरकतउला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश।

पूर्वा भारद्वाज, निरंतर, नयी दिल्ली।

पुरुषोत्तम मिश्र, *पी.जी.टी.* संस्कृत, रा. व. मा. बा. विद्यालय नं. 1, मॉडल टाउन, दिल्ली।

टीकाराम त्रिपाठी, *पी.जी.टी.* संस्कृत, शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश।

सुगन्ध पाण्डेय, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

कमलेश महता, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय, महिपालपुर, दिल्ली।

सदस्य एवं समन्वयक

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर उमाशंकर शर्मा ऋषि, सेवानिवृत, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना एवं डॉ. अष्टभुजा शुक्ल, प्रवक्ता संस्कृत, संस्कृत महाविद्यालय, चित्राखोर, बरहुआ, वस्ती, उत्तर प्रदेश की आभारी है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासम्भव योगदान दिया है।

परिषद् प्रोफ़ेसर रामकरण शर्मा, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी तथा दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा एवं डॉ. श्रीधर भास्कर वर्णेकर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है जिनकी रचनाओं से इस पुस्तक में पाठ्य-सामग्री ली गई है।

पुस्तक निर्माण में सहयोग के लिए परशराम कौशिक, प्रभारी, कम्प्यूटर स्टेशन, भाषा विभाग; दुर्गा देवी, प्रूफ़ रीडर एवं कमलेश आर्य, डी.टी.पी. ऑपरेटर धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भाषा में प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, कला, दर्शन, विज्ञान आदि विषयों की अभिव्यक्ति होती रही है। भारतवर्ष का विशाल भूभाग विविधताओं से भरा हुआ है। इसमें भावनात्मक एकता की सदा प्रवाहित होने वाली धारा संस्कृत के माध्यम से जानी जा सकती है। विविध भारतीय भाषाओं पर भी संस्कृत के व्याकरण तथा वाक्य–रचना का प्रभाव परिलक्षित होता है। परस्पर सहयोग, त्याग, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रभक्ति, विश्वबन्धुत्व आदि में निहित साहित्य का नैतिक महत्त्व आज पूर्व की अपेक्षा अत्यधिक माना जाता है। इन सबके विकास के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। आधुनिक संस्कृत रचनाएँ समाज के उपेक्षित समुदाय के प्रति भी उदारतापूर्वक मुखर हैं। इससे संस्कृत का महत्त्व वस्तुतः बढ़ गया है।

सम्प्रेषणात्मक उपागम के आधार पर संस्कृत के शिक्षण को विद्यालय स्तर पर सुगम, रुचिकर तथा सुग्राह्य रूप में प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार स्वीकृत पाठ्यक्रम के क्रम में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में संस्कृत की नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत भाषा–विभाग द्वारा उच्चप्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकास किया गया है। इसमें अध्येताओं को जागरूक बनाने वाली तथा यथार्थ जीवन से संबद्ध रोचक एवं ज्ञानवर्धक सामग्री दी गई है।

रुचिरा पुस्तक शृङ्खला अपने नाम के अनुसार रुचिवर्धक सामग्री से विद्यालय स्तर पर छात्र–छात्राओं में संस्कृत भाषा के प्रयोग में कुशलता तो देगी ही साथ ही संस्कृत भाषा तथा साहित्य के प्रति उनमें अपेक्षित अभिरुचि भी उत्पन्न करने में समर्थ होगी, ऐसा विश्वास है।

इसी शृङ्खला का तृतीय पुष्प **रुचिरा तृतीयो भागः** छात्र–छात्राओं के लिए प्रस्तुत है। इसके निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थियों

की अन्तःक्रिया प्रश्नोत्तर माध्यम से संस्कृत में ही हो जिससे विद्यार्थी सरल संस्कृत वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित कर सकें।

रुचिरा के इस भाग में कुल 15 पाठ हैं जिनमें छह पद्यात्मक तथा तीन संवादात्मक या नाट्यरूप हैं। शेष पाठ कथात्मक या निबन्धात्मक हैं। पद्यात्मक पाठों में *सुभाषितानि* नैतिक मूल्यों से युक्त प्राचीन कवियों की सुन्दर उक्तियों का संकलन है। सभी पद्य गेय हैं। *अशोकवनिका* शीर्षक पाठ वाल्मीकिरचित रामायण के सुन्दरकाण्ड से संकलित है जिसमें लङ्का में स्थित अशोकवनिका के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन है। *हिमालयः* कालिदास के कुमारसम्भवम् महाकाव्य से संकलित है जो पर्वतराज हिमालय के नैसर्गिक सौन्दर्य का वर्णन है। प्रहेलिका में प्राचीन काल से प्रचलित संस्कृत पहेलियों का संकलन है। इन प्राचीन संस्कृत पद्य-रचनाओं के अतिरिक्त दो आधुनिक संस्कृत गीत भी इस पाठ में संकलित हैं। संस्कृत भाषा की छन्दःसम्पदा की लय एवं गेयता का आनन्द छात्रों को प्राप्त हो, एतदर्थ कुछ नवीन गीत भी इस पुस्तक में दिये गए हैं। *सदैव पुरतो निधेहि चरणम्* स्व. श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित उद्बोधन-कविता के रूप में है। जलवाहिनी एक लोकगीत का संस्कृत गीति-रूपान्तर है।

संवादात्मक पाठों में *भगवदज्जुकम्* बोधायन-रचित संस्कृत-प्रहसन से संकलित पाठ है जिसमें परकायप्रवेश का विचित्र और रोचक कथानक है। *सप्तभगिन्यः* उत्तर-पूर्व भारत के सात राज्यों के सांस्कृतिक महत्व दिखानेवाला पाठ है। इसी प्रकार *कः रक्षति कः रक्षितः* में संवाद के द्वारा आधुनिक जीवन में बढ़ते जा रहे प्लास्टिक पदार्थों के उपयोग के कारण उत्पन्न होनेवाली पर्यावरणीय समस्याओं पर दृष्टि डाली गई है।

गद्यात्मक पाठों में *बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता* विष्णुशर्मा द्वारा रचित प्रसिद्ध नीतिकथा पञ्चतन्त्र से संकलित है जिसमें शृगाल तथा मूर्ख सिंह की कथा दी गई है। *धर्मे धमनं पापे पुण्यम्* पाठ एक लोककथा का संस्कृत में आधुनिक रूपान्तरण है जिसमें लोककथा के कौतुक के निर्वाह के साथ प्रत्युत्पन्नमतित्व का रोचक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। *प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा* गुंजराती के प्रसिद्ध कथाकार एवं शिक्षाविद् गिजूभाई की एक गुजराती कहानी का संस्कृत रूपान्तर है।

इसमें तीन कथात्मक गद्य-पाठों के अतिरिक्त तीन नवनिर्मित निबन्ध भी हैं, जिनमें *संसारसागरस्य नायका:* जल प्रबंधन के पारंपरिक ज्ञान से जुड़े उन वास्तुकारों के विषय में भावप्रवण परिचय देता है जिन्हें राजस्थान में गजधर कहा जाता था। *सावित्री बाई फुले* पाठ में, महाराष्ट्र में स्त्री-शिक्षा के तथा दलित चेतना के प्रसार कार्यों में अग्रणी एक प्रसिद्ध महिला की जीवनी दी गयी है। अन्तिम निबन्ध प्राचीन भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक *आर्यभट* के वैज्ञानिकचिन्तन को प्रकाशित करता है। इसे आर्यभट शीर्षक से प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार पाठों का चयन नयी दृष्टि से संस्कृत के व्यापक रूप को प्रतिनिधित्व देते हुए किया गया है। प्रत्येक पाठ के आरम्भ में पाठ-परिचय देते हुए उसके अन्त में शब्दार्थ, अभ्यास-प्रश्न तथा योग्यता-विस्तार के द्वारा विद्यार्थियों के बुद्धि-विकास एवं भाषा-संरचनात्मक ज्ञान की प्रगति पर ध्यान रखा गया है।

संक्षेप में **रुचिरा तृतीयो भागः** में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया है:

- संस्कृत भाषा और साहित्य की समकालीन सन्दर्भों में पहचान
- अभी तक पाठ्य-पुस्तकों में उपेक्षित विषयों को रेखांकित करना
- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- दिये गये निर्देशों के आधार पर प्रश्नोत्तर एवं प्रश्न-निर्माण का कौशल
- भाषिक तत्त्वों (श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन) का कौशल
- जीवनमूल्यों से युक्त सुभाषित-पद्यों का परिचय
- संस्कृत में सामान्य वार्तालाप कर सकने की क्षमता
- संस्कृत वर्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता
- रोचक प्राचीन और आधुनिक कथाओं के द्वारा कल्पना-शीलता का विकास

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों तक पहुँचाने में शिक्षक की मध्यस्थता तो आवश्यक होती ही है, उसे अत्यधिक सुरुचिपूर्ण, सहज और ग्राह्य बनाने में भी उसकी सक्रिय भूमिका महत्त्वपूर्ण है। अध्यापन की सफलता के लिए एक ओर तकनीकी शैली से

निर्मित पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा रहती है तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित व्याकरण-सम्बन्धी बिन्दुओं और भाषिक तत्त्वों के प्रायोगिक अभ्यास हेतु कुशल अध्यापन-शैली भी अपेक्षित है। आशा की जाती है कि शिक्षकगण प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से भाषा के अपेक्षित कौशलों को विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ विद्यार्थियों तक पहुँचाने में अपना बहुमूल्य योगदान प्रदान करेंगे। कथा-प्रसङ्गों तथा गीतों को हृदयङ्गम बनाने के लिए आवश्यकता के अनुसार दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक माध्यमों का उपयोग अपेक्षित है। जो पाठ संवाद-परक हैं उनका अभिनय भी विद्यार्थियों से कराया जा सकता है।

इस संकलन को यद्यपि विद्यार्थियों के अनुरूप बनाने का पूरा प्रयास किया गया है तथापि इसे विद्यार्थियों के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अनुभवी संस्कृत अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं के बहुमूल्य एवं सार्थक सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

पाठानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
	पुरोवाक्	iii
	भूमिका	vii
	मङ्गलम्	xii
प्रथमः पाठः	सुभाषितानि	1
द्वितीयः पाठः	बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता	6
तृतीयः पाठः	भगवदज्जुकम्	13
चतुर्थः पाठः	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्	23
पञ्चमः पाठः	धर्मे धमनं पापे पुण्यम्	29
षष्ठः पाठः	प्रेमलस्य प्रेमल्याश्च कथा	37
सप्तमः पाठः	जलवाहिनी	43
अष्टमः पाठः	संसारसागरस्य नायकाः	50
नवमः पाठः	सप्तभगिन्यः	59
दशमः पाठः	अशोकवनिका	68
एकादशः पाठः	सावित्री बाई फुले	74
द्वादशः पाठः	कः रक्षति कः रक्षितः	80
त्रयोदशः पाठः	हिमालयः	88
चतुर्दशः पाठः	आर्यभटः	9
पञ्चदशः पाठः	प्रहेलिकाः	1
परिशिष्टम्	सन्धिः, कारकम्, शब्दरूपाणि धातुरूपाणि च	

मङ्गलम्

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं
तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥1॥
–शुक्लयजुर्वेदः(34.1)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्या–
न्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥2॥
–शुक्लयजुर्वेदः(34.6)

रूपान्तरम्

जो रहता है जाग्रत और दूर दूर तक जाता है,
सोया रह कर भी ऐसे ही जा कर वापस आता है।
दूर दूर वह जाने वाला सब तेजों का ज्योतिनिधान
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥1॥

जो जन जन को बागडोर से इधर उधर ले जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़ों को इच्छित चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदयदेश में अजर और अतिशय गतिमान्
सदा समन्वित शुभसङ्कल्पों से वह मन मेरा बने महान् ॥2॥

प्रथमः पाठः

सुभाषितानि

['सुभाषित' शब्द 'सु + भाषित' इन दो शब्दों के मेल से सम्पन्न होता है। सु का अर्थ सुन्दर, मधुर तथा भाषित का अर्थ वचन है। इस तरह *सुभाषित* का अर्थ सुन्दर/मधुर वचन है। प्रस्तुत पाठ में सूक्तिमञ्जरी, नीतिशतकम्, मनुस्मृतिः, शिशुपालवधम्, पञ्चतन्त्रम् से रोचक और विचारोत्तेजक श्लोकों को संगृहीत किया गया है।]

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
सुस्वादुतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥1॥

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुःपुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानः
तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥2॥

लुब्धस्य नश्यति यशः पिशुनस्य मैत्री
नष्टक्रियस्य कुलमर्थपरस्य धर्मः।
विद्याफलं व्यसनिनः कृपणस्य सौख्यं
राज्यं प्रमत्तसचिवस्य नराधिपस्य ॥3॥

पीत्वा रसं तु कटुकं मधुरं समानं
माधुर्यमेव जनयेन्मधुमक्षिकासौ।
सन्तस्तथैव समसज्जनदुर्जनानां
श्रुत्वा वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति ।।4।।

महतां प्रकृतिः सैव वर्धितानां परैरपि।
न जहाति निजं भावं संख्यासु लाकृतिर्यथा ।।5।।

स्त्रियां रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ।।6।।

गुणज्ञेषु	–	गुणियों में
सुस्वादुतोयाः	–	स्वादिष्ट जल
प्रभवन्ति	–	निकलती हैं/उत्पन्न होती हैं
समुद्रमासाद्य (समुद्रम्+आसाद्य)	–	समुद्र में मिलकर/पहुँचकर
भवन्त्यपेयाः (भवन्ति+अपेयाः)	–	पीने योग्य नहीं होती
विषाणहीनः	–	सींग के बिना
खादन्नपि (खादन्+अपि)	–	खाते हुए भी
जीवमानः	–	जिन्दा रहता हुआ
पिशुनस्य	–	चुगलखोर/चुगली करने वाले की
व्यसनिनः	–	बुरी लत वालों की
नराधिपस्य (नर+अधिपस्य)	–	राजा का/के/की

जनयेन्मधुमक्षिकासौ (जनयेत्+मधुमक्षिका+असौ)	– यह मधुमक्खी पैदा करती/निर्माण करती है
सन्तस्तथैव (सन्तः+तथा+एव)	– वैसे ही सज्जन
सृजन्ति	– निर्माण करते हैं
प्रकृतिः	– स्वभाव/आदत
वर्धितानाम्	– बढ़ाये गए/प्रशंसित
परैरपि (परैः+अपि)	– दूसरों से भी/परायों से भी
जहाति	– छोड़ता है
लाकृतिर्यथा (लृ+आकृतिः+यथा)	– जैसे नौ का आकार/स्वभाव
रोचमानायाम्	– अच्छी लगने पर

अभ्यासः

1. पाठे दत्तानां पद्यानां सस्वरवाचनं कुरुत।
2. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-
   (क) समुद्रमासाद्य .... ।
   (ख) .... वचः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।
   (ग) तद्भागधेयं .... पशूनाम्।
   (घ) विद्याफलं .... कृपणस्य सौख्यम्।
   (ङ) स्त्रियां .... सर्वं तद् .... कुलम्।
3. प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-
   (क) व्यसनिनः किं नश्यति?
   (ख) कस्यां रोचमानायां सर्वं कुलं रोचते?

(ग) कस्य यशः नश्यति?

(घ) कस्मिन् श्लोके सत्सङ्गतेः प्रभावो वर्णितः?

(ङ) मधुरसूक्तरसं के सृजन्ति?

4. अधोलिखित-तद्भव-शब्दानां कृते पाठात् चित्वा संस्कृतपदानि लिखत-

यथा- कंजूस	कृपणः
कड़वा	....
पूँछ	....
लोभी	....
मधुमक्खी	....
तिनका	....

5. अधोलिखितेषु वाक्येषु कर्तृपदं क्रियापदं च चित्वा लिखत-

वाक्यानि	कर्त्ता	क्रिया
यथा-सन्तः मधुरसूक्तरसं सृजन्ति।	सन्तः	सृजन्ति
(क) निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।	....	....
(ख) गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।	....	....
(ग) मधुमक्षिका माधुर्यं जनयेत्।	....	....
(घ) पिशुनस्य मैत्री यशः नाशयति।	....	....
(ङ) नद्यः समुद्रमासाद्य अपेयाः भवन्ति।	....	....

6. रेखाङ्कितानि पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>गुणाः</u> गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति।

(ख) <u>नद्यः</u> सुस्वादुतोयाः भवन्ति।

(ग) <u>लुब्धस्य</u> यशः नश्यति।

(घ) <u>मधुमक्षिका</u> माधुर्यमेव जनयति।

(ङ) महतां <u>प्रकृतिः</u> सुस्थिरा भवति।

7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत-

यथा-समुद्रमासाद्य	—	समुद्रम्	+	आसाद्य
माधुर्यमेव	—	....	+	....
अल्पमेव	—	....	+	....
सर्वमेव	—	....	+	....
समानमपि	—	....	+	....
महात्मनामुक्तिः	—	....	+	....

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में महापुरुषों की प्रकृति, गुणियों की प्रशंसा, सज्जनों की वाणी, साहित्य-संगीत-कला की महत्ता, चुगलखोरों की दोस्ती से होने वाली हानि, स्त्रियों के प्रसन्न रहने में सबकी खुशहाली को आलङ्कारिक भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

पाठ के श्लोकों के समान अन्य सुभाषितों को भी स्मरण रखें तथा जीवन में उनकी उपादेयता/संगति पर विचार करें।

(क) येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

(ख) गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।

(ग) प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति।

(घ) दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

(ङ) न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।

(च) उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तङ्गते तथा।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।।

उपर्युक्त सुभाषितों के अंशों को पढ़कर स्वयं समझने का प्रयत्न करें तथा सं
एवं अन्य भारतीय-भाषाओं के सुभाषितों का संग्रह करें।

'गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति'-इस पंक्ति में विसर्ग सन्धि के नियम में 'गुणाः' के का दोनों बार लोप हुआ है। सन्धि के बिना पंक्ति 'गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति

द्वितीयः पाठः

बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता

[प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध कथाग्रन्थ 'पञ्चतन्त्रम्' के तृतीय तन्त्र 'काकोलूकीयम्' से संकलित है। पञ्चतन्त्र के मूल लेखक विष्णुशर्मा हैं। इसमें पाँच खण्ड हैं जिन्हें 'तन्त्र' कहा गया है। इनमें गद्य-पद्य रूप में कथाएँ दी गयी हैं जिनके पात्र मुख्यतः पशु-पक्षी हैं।]

अव्ययप्रयोगः

कस्मिंश्चित् वने खरनखरः नाम सिंहः प्रतिवसति स्म। सः कदाचित् इतस्ततः परिभ्रमन् क्षुधार्तः न किञ्चिदपि आहारं प्राप्तवान्। ततः सूर्यास्तसमये एकां महतीं गुहां दृष्ट्वा सः अचिन्तयत्-"नूनम् एतस्यां गुहायां रात्रौ कोऽपि जीवः आगच्छति। अतः अत्रैव निगूढो भूत्वा तिष्ठामि" इति।

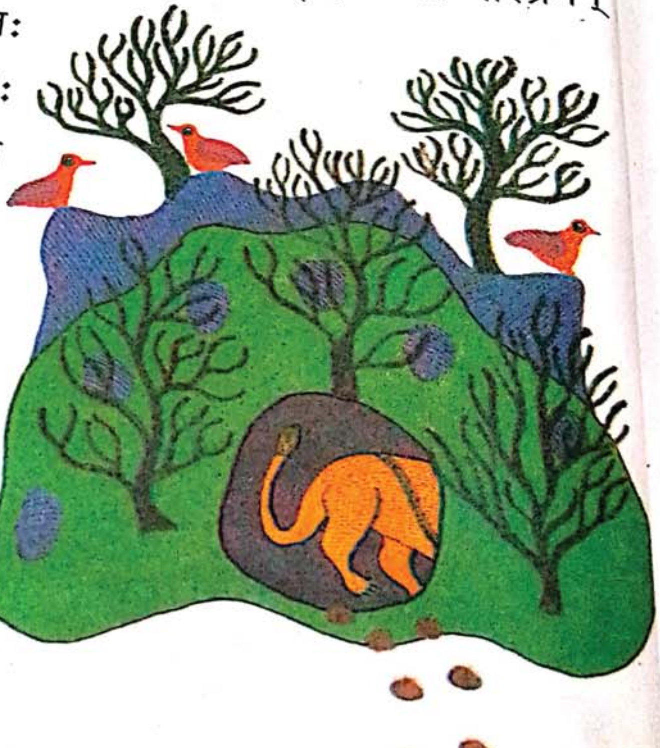

एतस्मिन् अन्तरे गुहायाः स्वामी दधिपुच्छः नाम शृगालः समागच्छत्। स च यावत् पश्यति तावत् सिंहपदपद्धतिः गुहायां प्रविष्टा दृश्यते, न च बहिरागता। शृगालः अचिन्तयत्-"अहो विनष्टोऽस्मि। नूनम् अस्मिन् बिले सिंहः अस्तीति र्कयामि। तत् किं करवाणि?" एवं विचिन्त्य

दूरस्थः रवं कर्तुमारब्धः–"भो बिल! भो बिल! किं न स्मरसि, यन्मया त्वया सह समयः कृतोऽस्ति यत् यदाहं बाह्यतः प्रत्यागमिष्यामि तदा त्वं माम् आकारयिष्यसि? यदि त्वं मां न आह्वयसि तर्हि अहं द्वितीयं बिलं यास्यामि इति।"

अथ एतच्छ्रुत्वा सिंहः अचिन्तयत्–"नूनमेषा गुहा स्वामिनः सदा समाह्वानं करोति। परन्तु मद्भयात् न किञ्चित् वदति।"

अथवा साध्विदम् उच्यते–

भयसन्त्रस्तमनसां हस्तपादादिकाः क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च वेपथुश्चाधिको भवेत्।।

तदहम् अस्य आह्वानं करोमि। एवं सः बिले प्रविश्य मे भोज्यं भविष्यति। इत्थं विचार्य सिंहः सहसा शृगालस्य आह्वानमकरोत्। सिंहस्य उच्चगर्जन-प्रतिध्वनिना सा गुहा उच्चैः शृगालम् आह्वयत्। अनेन अन्येऽपि पशवः भयभीताः अभवन्। शृगालोऽपि ततः दूरं पलायमानः इममपठत्–

अनागतं यः कुरुते स शोभते
स शोच्यते यो न करोत्यनागतम्।
वनेऽत्र संस्थस्य समागता जरा
बिलस्य वाणी न कदापि मे श्रुता।।

0851

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

[illegible]TIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRA[illegible]ING

ISBN 978-[illegible]450-810-2